फणीश्वरनाथ रेणु की साहित्य साधना

संपादक

डॉ. निशा रम्पाल

डॉ. भानु वसावा

डॉ. राजेन्द्र परमार

फणीश्वरनाथ रेणु की साहित्य साधना

संपादक
डॉ. निशा रम्पाल
डॉ. भानु वसावा
डॉ. राजेन्द्र परमार

उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स,
कानपुर

I.S.B.N. : 978-93-91635-26-8

पुस्तक : फणीश्वरनाथ रेणु की साहित्य साधना
संपादक : डॉ. निशा रम्पाल, डॉ. भानु वसावा
एवं डॉ. राजेन्द्र परमार
संस्करण : प्रथम, सन् 2022
सर्वाधिकार : लेखक
मूल्य : ₹ 695.00 मात्र
प्रकाशक : उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर
A-685, आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर - 21
E-mail : utkarshpublishersknp@gmail.com
मोबाइल : 8707662869
मुद्रक : त्र्यम्बक प्रिंटर्स, कानपुर, मो. - 9336832305
शब्द सज्जा : अम्बुज ग्राफिक्स, आर.के. नगर, कानपुर

FANISHWARNATH RENU KI SAHITYA SADHNA
Edited by – *Dr. Nisha Rampal, Dr. Bhanu Vasava & Dr. Rajendra Parmar*
Price : Rs. Six Hundred Ninty Five Only

12. फणीश्वरनाथ 'रेणु' का कहानी संसार
डॉ. भानुबहन ए. वसावा 86
13. कहे कवि रेणु की कविताई
डॉ. राजेन्द्र परमार 92
14. फणीश्वरनाथ 'रेणु' के उपन्यासों में अभिव्यक्त ग्रामीण जीवन
डॉ. करसन रावत 99
15. हिन्दी कथा साहित्य में 'रेणु' का योगदान
डॉ. श्रीप्रकाश मिश्रा 104
16. फणीश्वरनाथ 'रेणु' के अप्रतिम रिपोतार्ज
डॉ. ज्योति किरण दवे 109
17. रेणु के उपन्यासों के कथा स्थल
डॉ. सुरेश भाई झेड चौधरी 111
18. मैला आँचल : एक चर्चा
डॉ. शिरीन एम शेख 117
19. फणीश्वरनाथ 'रेणु' और उनका काव्य
डॉ. श्रृंखला 121
20. फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कहानियों में लोक संस्कृति
डॉ. अमितभाई एन. पटेल 127
21. आंचलिकता के पर्याय फणीश्वरनाथ 'रेणु'
डॉ. प्रियंका कुमारी 135
22. फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में लोक संस्कृति
कन्हैया झा 141
23. रेणु की कहानियों में मानवीय संवेदना
डॉ. हेतल चौहान 146
24. रेणु की कहानियों में सामाजिक युग बोध
कापडिया किंजल 151
25. फणीश्वरनाथ 'रेणु' कृत मैला आँचल उपन्यास में आंचलिकता
डॉ. सुनील परमार 156

13.

कहे कवि रेणु की कविताई

डॉ. राजेन्द्र परमार

सन् 2021 का वर्ष फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म शताब्दी वर्ष हैं। हिंदी साहित्य में प्रेमचंद के बाद रेणु ही एकमात्र ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने ग्रामीण जीवन को बहुत करीब से देखा ही नहीं बल्कि उसे अपने कथा साहित्य में मूर्त रूप भी प्रदान किया। हम सब जानते ही हैं कि रेणु ने अपने लेखन से हिंदी साहित्य में खास करके कथा साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है, जो विगत सौ वर्षों के बाद भी कायम है। इसका कारण है रेणु का जमीन के साथ जुड़े रहना। कहने की आवश्यकता नहीं है कि जो रचनाकार जमीन के साथ जुड़ा हुआ होता है उसका प्रभाव दीर्घकाल तक रहता है। हमारे मन में सवाल पैदा हो सकता है कि जमीन के साथ जुड़ने का क्या अर्थ होता है? तो इस सवाल के अपेक्षित उत्तर में सिर्फ यही कहा जा सकता है कि हमें रेणु के साहित्य से गुजरना पड़ेगा। रेणु को एक कथाकार के रूप में बहुत प्रसिद्धि मिली हैं, इस बात का प्रमाण स्वयं उनके द्वारा लिखा गया कथा साहित्य है। किन्तु बहुत कम लोग जानते हैं कि रेणु एक कवि भी थे। उनके भीतर एक कवि भी बसता था। 'मैला आँचल' उपन्यास में जिन लोकगीतों का उल्लेख आया है, वे सरल, सहज बन पड़े हैं। उनके द्वारा रचित लोकगीत पाठकों पर अमिट छाप छोड़ते हैं। इसके अतिरिक्त रेणु ने कई कविताओं की भी रचना की है, जो अब तक फाइलों में बंद थीं। इन कविताओं को प्रकाश में लाने का श्रेय भारत यायावर जी को जाता है। भारत यायावरजी ने ही रेणु द्वारा लिखित कविताओं का संपादन 'कवि रेणु कहे' शीर्षक से किया है। इस संकलन में रेणु की कुल सत्ताईस कविताएँ संकलित हैं। इस पुस्तक की भूमिका में भारत यायावरजी ने लिखा है– "कथाकार रेणु का कवि होना अपने आप में महत्वपूर्ण है। रेणु यदि कवि नहीं होते तो उनका कथा साहित्य क्या इतना सरस, संवेद्य और ललित होता? कवि होने के कारण ही उनको 'गाते हुए गद्य के लेखक' के रूप में रेखांकित किया गया है।"[1] 'कवि रेणु कहे कब रैन कटे, तमतोम घटे... ' जैसी तुकबंदी करने वाले रेणु के लेखन की शुरुआत कविता से ही हुई थी,